पतझर की सांझ

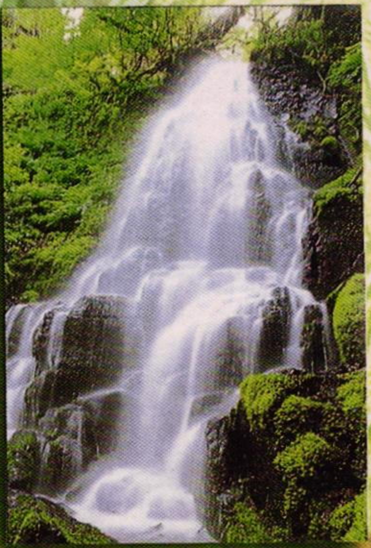

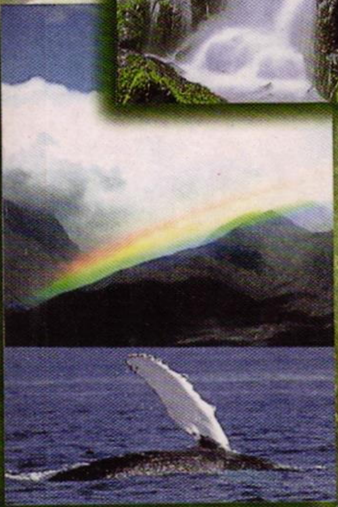

सिद्धेश्वर

पतझर की सांझ

हाइकु
काव्य-संग्रह

सिद्धेश्वर

बच्ची प्रसाद

सदैव सुख एवं दु:ख में
मेरी अर्द्धांगिनी बनकर
जो हर कदम पर
मेरे साथ हैं
उन्हीं को
सप्रेम
समर्पित

सिद्धेश्वर

पतझर की सांझ

सिद्धेश्वर

प्रकाशक : सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800 001
दूरभाष : 0612-228519

© : सिद्धेश्वर

प्रथम संस्करण : 1998

कम्पोजर : कोरल कम्प्यूटर प्रिन्ट
फ्रेजर रोड, पटना-800 001

मुद्रक : प्रोलिफिक इनकॉरपोरेटिड
ओखला, फेस-दो, नई दिल्ली-110020

मूल्य : 100 रुपये

सौजन्य : राष्ट्रीय विचार मंच
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-1

Patjhar Ki Sanjh : Hyku poems by Sidheshwar

Rs. 100.00

अभिमत

हाइकु जापानी काव्य-रूप है। हिन्दी में इसे लाने का श्रेय अज्ञेय जी को है। 1960 के आस-पास उनका कविता-संग्रह प्रकाशित था-'अरी ओ करुणा'। उसमें उन्होंने अनेक हाइकु दिए थे। उनमें से कुछ जापानी कवियों के हाइकु के अनुवाद थे और कुछ उनकी मौलिक रचना। कहा नहीं जा सकता कि वह इस लघु काव्य-रूप का जादू था, या अज्ञेय जी का कमाल कि वे हाइकु हिन्दी कविता में पूरब की ओर एक छोटी-सी खिड़की खोलते हुए लगे थे, जिससे बहुत ही ताजा हवा अंदर आ रही थी। उसका परिणाम यह हुआ कि हिन्दी में हाइकु लिखना एक फैशन हो गया और श्रीकांत वर्मा-जैसे कवि तक ने काफी हाइकु लिखे। उनके 'दिनारम्भ' नामक कविता-संग्रह में संकलित हैं।

हाइकु में तीन-चार पंक्तियों में प्रकृति या मनुष्य का एक मुकम्मल चित्र प्रस्तुत किया जाता है। उस चित्र में पूरी चुस्ती होनी चाहिए, वर्ना वह प्रभावशाली नहीं होगा। अकारण नहीं कि अज्ञेय जी के सारे हाइकु छंद की लय और गति से युक्त थे। बाद में जो हाइकु लिखे गए, उनकी नोटिस इस कारण नहीं ली गई कि उनकी रचना के पीछे कोई सर्जनात्मक दबाव सक्रिय न था।

मैं तो भूल ही गया था कि हिन्दी कविता में कभी हाइकु भी लिखे गए थे। इधर एकाध कवि का पूरा हाइकु संग्रह को देखने का मौका मिला, तो पुरानी घटना याद आ गई। उसी क्रम में मेरे सहपाठी सिद्धेश्वर जी ने अपने हाइकु का बृहत् संग्रह मुझे अवलोकनार्थ दिया, तो मैं शुरू से अंत तक इसे देख गया, बहुत ही उत्सुकता के साथ, कि शायद इसमें हाइकु के कुछ नए आयाम प्रकट हुए हों।

सिद्धेश्वर जी के हाइकु प्रकृति या मनुष्य तक सीमित नहीं हैं। मनुष्य की समग्र गति-विधि को समेटने में वे मनुष्य का बहुत व्यापक रूप लेकर चलते हैं। इस तरह मानना चाहिए कि उन्होंने हाइकु के

साथ विषय की जो सीमा थी, उसे तोड़ दिया है और उसे बहुत ही मुक्त रूप में स्वीकार किया है। दूसरी बात यह है कि उन्होंने छंद और लय को भी गैरजरूरी समझा है। मनुष्य की वाणी में जो विशिष्ट है, वह कविता है, वह छोटी हो या बड़ी। इस तरह उनकी कविता की परिभाषा बहुत विस्तृत है। उसमें पूरे जीवन क्या, पूरे विश्व के लिए जगह है, और बिना किसी बनाव-सिंगार के।

मेरी बात एक-दो उदाहरणों से स्पष्ट हो जाएगी। उनका एक हाइकु है :

'लहर पर
मचलती चाँदनी
मछली जैसी'

इसे तो उन्होंने निस्संकोच अपने संग्रह में शामिल किया ही है, ऐसे हाइकु भी उसमें बड़ी संख्या में हैं :

'वक्ता नहीं है
द्विवेदी जी-सा कोई
आज हिन्दी में'

जरूरी नहीं कि फैशन में लिखी गई चीजें किसी साहित्य को समृद्ध करें। ग़ज़ल, सोनेट आदि सभी विदेशी काव्य-रूप हैं, पर इन्होंने हिन्दी कविता को समृद्ध किया है। मेरी कामना है कि सिद्धेश्वर जी के हाइकु पाठकों और विद्वानों को पसंद आए और वे हिन्दी कविता में उनकी देन माने जाएं।

लखनचंद कोठी
गुलबी घाट, महेन्द्रू
पटना-800 006
9 अक्टूबर, 1998

नंद किशोर नवल
विश्वविद्यालय प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
पटना विश्वविद्यालय
पटना-800 005

अपनी ओर से

जिस प्रकार मानव, उसका स्वभाव, उसकी स्थिति तथा समस्याएं दिन-प्रतिदिन बदलती जाती हैं उसी प्रकार साहित्य में भी परिवर्तन आते रहते हैं। उसमें नए-नए विचार, नए विधान, नई विधाओं तथा नई समस्याओं का समावेश होता रहता है। जब विज्ञान मानवीय बुद्धि के प्रसार में बद्धमूल जीवन को एक विशेष दिशा की ओर मोड़ रहा है तब साहित्य इस सामूहिक प्रक्रिया से अलग कैसे रह सकता है ?

विज्ञान में 'कम्प्यूटर' की तरह साहित्य के क्षेत्र में 'हाइकु' भी जापान की देन है। यह जापानी पद्य शैली की एक आक्षरिक छन्द प्रणाली है। अक्षरों की गिनती की सहज काव्य-विधा है हाइकु। पाँच-सात-पाँच वर्णों के क्रम में त्रिपदी-सत्रह वर्णी 'हाइकु' एक ऐसी विधा है जिसमें कम से कम शब्दों में पाठकों के समक्ष अपने भाव को व्यक्त कर दिए जायं। 'हाइकु' का जापानी शाब्दिक अर्थ-'नटभंगी' है या जल्दी की कविता। विश्व कविता में तेजी से हो रहे परिवर्तनों-परिवर्द्धनों के साथ अंग्रेजी ने इसे अपने में पचा लिया और फिर अंग्रेजी के माध्यम से ही हाइकु का प्रवेश विश्व की अन्य भाषाओं के साथ-साथ हिन्दी भाषा में हुआ। आज हिन्दी ही नहीं बल्कि सभी भारतीय भाषाओं में 'हाइकु' की अनुगूंज सुनाई पड़ रही है तथा उसमें प्रतिष्ठित हो रही है।

आज के इस आपाधापी के युग में आम आदमी खासकर निम्न एवं मध्यवर्गीय परिवार जीवन संघर्षों, जटिलताओं एवं अनेक समस्याओं के बीच साहित्य के अपने पठन-पाठन का वक्त रोटी, कपड़ा और मकान के निदान में लगाने को विवश है। इस भागमभाग की स्थिति में उसका ध्यान अब बड़ी-बड़ी कहानियों, उपन्यास तथा लम्बी कविताओं के बजाय लघु कथाओं तथा छोटी कविताओं की ओर उन्मुख होना स्वाभाविक है। अतएव आधुनिक जीवन की तेजी से बदलती हुई परिस्थितियों में आज समय की मांग है कि साहित्य

में नए युग के अनुकूल कम से कम शब्दों में अपने भावों को समाहित किया जाय जो एक साथ दर्पण और दीपक का काम करे। इसके माध्यम से जीवनगत विचारों के सह-अस्तित्व से वर्तमान सभ्यता और संस्कृति को बचाया जा सकता है। इसके लिए पूरब और पश्चिम के सभी प्रगतिशील साहित्यिक मानदण्डों एवं विधाओं को समीकृत करना होगा। इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर इस कृति की रचना की गयी है।

जापान के सुप्रसिद्ध कवि मात्सुओ बाशो (1644-1694) ने हाइकु को काव्य विधा के रूप में प्रतिष्ठा प्रदान की। 17वीं शताब्दी से लेकर आज तक इन चार शताब्दियों में हाइकु जापान के सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। और जैसा कि मैंने पूर्व में कहा, आज हाइकु जपानी साहित्य की सीमाओं को लांघ कर विश्व-साहित्य की निधि बन गया है। अन्य विधाओं के समानान्तर कदमताल कर रहा है, इस विधा की आज हिन्दी में जो संतोषप्रद स्थिति है उसके लिए हिन्दी के जिन सुप्रसिद्ध साहित्यकारों का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है उनमें सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय', त्रिलोचन शास्त्री, डॉ. सत्यभूषण वर्मा, डॉ. सुधा गुप्ता, डॉ. भगवतशरण अग्रवाल, प्रो. आदित्य प्रताप सिंह, उर्मिला कौल, डॉ. मनोज सोनकर सहित डॉ. लक्ष्मण प्र. नायक के नाम उल्लेखनीय हैं। अहिन्दी भाषी क्षेत्र उड़ीसा में हिन्दी के प्रचार के लिए पच्चीस लाख रूपये की पुस्तकों वाले विद्या मंदिर ग्रन्थागार के संस्थापक डॉ. लक्ष्मण प्र. नायक जापान से आयी इस काव्य विधा पर सराहनीय कार्य के लिए बहुत चर्चित रहे हैं। हाइकु की त्रैमासिक पत्रिका 'गुंजन' - के संपादक की हैसियत से इस विधा के संवर्द्धन में वे सदैव तल्लीन हैं। देवनागरी में लिप्यंतरित विश्व भर की भाषाओं को हाइकु-काव्य मंच की ओर से प्रकाशित पत्रिका 'हाइकु भारती' के मानद संपादक डॉ. भगवतशरण अग्रवाल का अवदान इस विधा को समृद्ध करने में उल्लेखनीय है। सच कहा जाय तो मुझे इसे विधा पर अपनी कलम चलाने का श्रेय इन्हीं दो प्रबुद्धजनों को जाता है। जिस प्रकार 'गुंजन' के माध्यम से

मैं डॉ. लक्ष्मण प्र. नायक के सान्निध्य में आया, उसी प्रकार अपनी 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' के जरिए डॉ. भगवतशरण अग्रवाल के सम्पर्क में। डॉ. नायक तथा डॉ. अग्रवाल ने क्रमशः 'गुंजन' तथा 'हाइकु भारती' में मेरी हाइकु कविता प्रकाशित कर मुझे प्रेरित किया। सर्वप्रथम 'गुंजन' में मेरी कविताएं छपीं। फिर प्रतापगढ़ (उ.प्र.) से नवसृजन की साहित्यिक त्रैमासिक 'प्रतापशोभा' के हाइकु विशेषांक में इन कविताओं को प्रकाशित कर इसके संपादक प्रदीप नारायण सिंह ने मेरा मनोबल बढ़ाया। इसके अतिथि संपादक डॉ. नायक थे।

(1)

लहर पर
मचलती चाँदनी
मछली जैसी

(2)

है निहारता
नाव से सैर वाला
दोनों किनारा

(3)

गूंज रहा है
कहीं मेरे भीतर
प्रणय गान

(4)

फटा चादर
जिस्म बेकसूर है
मजबूरी से

(5)

दोष क्यों दूँ
तदबीर के आगे
तकदीर को

डॉ. भगवतशरण अग्रवाल ने 'हाइकु भारती' पत्रिका में मेरी इन कविताओं को स्थान प्रदान कर मुझे प्रोत्साहित किया।

(1)

एक गोरैया
बैठी है चुपचाप
वातायनी में

(2)

देश के प्रति
आज भी उदासीन
प्रबुद्ध जन

(3)

हाशिए पर
आज भी महिलाएं
राजनीति में

(4)

भूल गए हैं
सारे सूत्र, नेता ही
नैतिकता के

इन सुपरिचित हाइकुकारों की प्रेरणा पाकर जब हमने लगभग एक हजार हाइकु कविताओं की रचना की, तब उसे लेकर मैं नई दिल्ली गया जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के जापानी भाषा विभाग के प्राध्यापक डॉ. सत्यभूषण वर्मा के पास। उन्होंने न केवल इन सारी कविताओं का आद्योपांत अवलोकन किया, बल्कि मार्गदर्शन तथा दिशा-निर्देश के साथ-साथ प्रेरणा के दो शब्द लिखकर मुझे इस बात की हिदायत दी कि इस हाइकु-संग्रह की छपाई सुन्दर ढंग से हो। मैं भाव-विभोर हुआ डॉ. वर्मा की हार्दिकता एवं स्नेह को पाकर। उपर्युक्त तीनों विद्वान एवं चर्चित हाइकुकारों की उदारता के लिए उनके प्रति मैं आभार व्यक्त करता हूँ इस विश्वास के साथ कि उनका स्नेह मुझे आगे भी मिलता रहेगा।

मेरी सामाजिक प्रतिबद्धता संघर्ष के अनुभवों का परिणाम है। सामाजिक सरोकारों से जुड़े रहने के कारण अनुभवों ने मुझमें एक ऐसी सामर्थ्य प्रदान की जिससे मैंने सामाजिक परिवेश की मानवीय पीड़ा को बखूबी समझा, परखा और अपने लेखन में अभिव्यक्त कर पा रहा हूँ। मेरी कविताओं में सामाजिक चेतना उभर कर आई है क्योंकि शोषितों, दलितों की पीड़ा ने मुझे इस रूप में सोचने को बाध्य किया है। इसलिए लेखन-शैली की उत्कृष्टता की अपेक्षा लेखन-विषय की गुणवत्ता को मैं अधिक महत्व देना पसन्द करता हूँ और सामाजिक सरोकारों को ही लेखन-विषय का सर्वोत्तम स्रोत मानता हूँ क्योंकि समाज के करीब में रहकर उसके लोगों को मैंने नजदीक से पढ़ा है और उनकी पीड़ा को देखा है। इसलिए मेरे शब्द और कर्म एक दूसरे से अनुप्राणित होते हैं।

डॉ. सत्यभूषण वर्मा के अनुसार हाइकु कवि कविता को जीवन के सत्य की अभिव्यक्ति मानता है। हाइकु में वह सत्य तथ्यात्मक सत्य अथवा काव्यात्मक सत्य दोनों में से कोई भी हो सकता है। तथ्यात्मक सत्य अनुभूत विषय के यथातथ्य चित्रांकन को जन्म देता है और

काव्यात्मक सत्य कवि हृदय की प्रतिक्रिया अथवा अनुभूति को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। उस क्षण को कवि ने कितनी गहराई से अनुभव किया है और उसे कितनी क्षमता के साथ वह व्यक्त करने में समर्थ है यही हाइकु कविता की सामर्थ्य है। बाशो की एक प्रसिद्ध कविता है—

जापानी	हिन्दी
फुरू इके या	ताल पुराना
काबाजु तो बिकोमु	कूदा दादुर
मिजुनो ओतो	पानी की आवाज

डॉ. वर्मा ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा है कि अपनी कुटिया के पास बने तालाब के किनारे एकान्त चिन्तन में डूबा कवि अचानक घास से भरे तट से उस शान्त तालाब में कूदते हुए मेढ़क के द्वारा जल में जो हल्की आवाज होती है, उससे कवि के मन में उठे उन्मेष से उसकी एक अनुगूंज उसकी चेतना में उठती है और अनुगूंज के उस क्षण को वह उपर्युक्त शब्दों में बांध देता है।

जापान के प्रसिद्ध हाइकु कवि बाशो के अनुसार हाइकु सम्पूर्ण कविता नहीं है, वह विराट सत्य की ओर इंगित करने वाली सांकेतिक अभिव्यक्ति है। शब्द-संयम हाइकु की अनिवार्यता है, लघु आकार में भाव-संयम शब्दों की मितव्ययिता और सांकेतिक अभिव्यंजना हाइकु की अनिवार्य आवश्यकता बन जाती है। इसके साथ ही भाव-संयम भी। कविवर रवीन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों में, हाइकु कविता गुलिर मध्ये जे केवल वाक्-संयम ता नय, एर मध्ये भावेर-संयम। शब्दों में जो कहा गया है, वह संकेत मात्र है, शेष पाठक की कल्पना और ग्रहणशक्ति पर छोड़ दिया जाता है। हाइकु का कवि निष्कर्ष नहीं देता। वह जितना कहता है, उससे कहीं अधिक अनकहा छोड़ देता है और वह अनकहा उससे कहीं अधिक महत्वपूर्ण है, जो कह दिया गया है। इस प्रकार हाइकु शब्द की साधना की कविता है।

जापानी वर्णों का अनुवाद क्रम संख्या चाहे अनूदित हो पा रही हो या नहीं, पर आज हिन्दी में यह वर्ण संख्या 5-7-5 के क्रम में स्थिर हो चुकी है। इसमें अर्द्धवर्णों की गणना नहीं की जाती। हाइकु की तीनों पंक्तियाँ एक दूसरे की पूरक होकर एक समन्वित प्रभाव की अन्विति में सहायक होती हैं। कोई शब्द अपने स्थान से हटाकर कहीं अन्यत्र रखने पर पूरा अर्थ बदल जाएगा।

हाइकु के साथ एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि इसके साथ प्रकृति का गहरा संबंध है। प्रकृति-चित्रों की सजीवता कविता से जुड़ी रहती है। प्रायः हाइकु की एक पंक्ति में प्रकृति का उल्लेख होता है पर यह आवश्यक नहीं।

डॉ. भगवतशरण अग्रवाल के मतानुसार हाइकु में हाइकुकार अपने आत्मसंघर्ष और मनोमंथन के असाधारण क्षणों के सत्य को अथवा किसी विशिष्ट अनुभूति को प्रकृति एवं जीवन के सौन्दर्य को फोटोग्राफर के रूप में नहीं चित्रकार के रूप में व्यक्त करता है। इसलिए उन क्षणों का सत्य, सर्वकालीन एवं देश विदेश की सीमाओं से परे का सत्य होने के कारण, सम्प्रेषणीयता की क्षमता से भरपूर होता है पर उसे सत्रह अक्षरों में बांधना उतना ही कठिन। इसलिए जापानी हाइकु के कथ्य और शिल्प का अनुशीलन कर उसके कथ्य का भारतीयकरण करके अर्थात् अपने देश की ही सांस्कृतिक-सामाजिक परम्पराओं की पृष्ठभूमि और आज के परिवेश में व्यक्त करना और शिल्पगत लक्षणों को जहाँ तक संभव हो, जापानी हाइकु के गुणधर्मों के अनुसार रखना अधिक समीचीन होगा। खुली प्रकृति, पूरा समाज और पूरा संसार हाइकु का शिविर है। इसका कोई जीर्ण-संकीर्ण खेमा-खूंटा नहीं। भारतीय भाषाओं में अनेक कवि हाइकु शैली में अभिव्यक्ति के नए प्रयोग कर रहे हैं।

हाइकु का एक और अन्य रूप है सैन्र्यू। सैन्र्यू भी तीन पंक्तियों की 5-7-5 वर्णक्रम की 17 वर्णी कविता है। जहाँ 'हाइकु' जीवन और प्रकृति के कार्य व्यापारों की भावात्मक अभिव्यक्ति की कविता है वहीं

सैर्न्यू मनुष्य की दुर्बलताओं अथवा दुर्बल क्षणों पर व्यंग्य अथवा पैरोडी है। कहने का तात्पर्य यह है कि हाइकु में प्रकृति महत्वपूर्ण है और सैर्न्यू में मनुष्य। मानवीकरण की प्रवृत्ति सैर्न्यू में अधिक मिलती है। इस सन्दर्भ में यह कहना प्रासंगिक होगा कि इन्हीं प्रकृति-चित्रों को लेकर अपनी इस प्रथम 'हाइकु' काव्य-कृति को आप सुधी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए, वस्तुतः मैं एक अपार आतंरिक आह्लाद की अनुभूति का अनुभव कर रहा हूँ। संभव है मानवीकरण की प्रवृत्ति या यों कहें कि सैर्न्यू कविताओं के संग्रह के साथ मैं दूसरे पड़ाव पर आपसे मिलूँ। बहरहाल हाइकु की इन कविताओं में प्रकृति, साहित्य, संस्कृति, हिन्दी, कविता, श्रृंगार, राष्ट्र चेतना, वेदना तथा पर्यावरण विषयों पर अपने भावों को अभिव्यक्त करने का मैंने प्रयास किया है।

हाइकु कविताओं को पाठकों तक परोसने में मुझे कहाँ तक सफलता मिली है यह तो सुधी पाठक ही बताएंगे, पर मुझे इतना विश्वास है कि आज के इस कसमकस माहौल में जब लोग लंबी कविता, कहानी, अथवा उपन्यास पढ़ने की ओर अपना समय नहीं निकाल पा रहे हैं, हाइकु की मेरी ये कविताएं संभवतः उनका ध्यान आकृष्ट कर उनके मन को जीतने में सक्षम हों तथा हमारे मन के भावों को ग्रहण कर सोचने को मजबूर भी। हमारे इस प्रयास से पाठकों को थोड़ा भी मानसिक खुराक मिल सके तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

निःसन्देह युग-धर्म के बदलने पर काव्य के संकेत बदलते हैं, भाषाओं का रूप बदलता है, व्याकरण के नक्शे बदलते हैं और छंद के बंध टूटते हैं। पर मानवीय संवेदनशील भावनाएं कभी नहीं बदलतीं, बदलती हैं बौद्धिक दिशाएं। जैसा कि मैंने पूर्व में कहा कि हमारी ये अनुभूतियाँ जीवन की विभिन्न स्थितियों की ही उपज हैं। हमारे मन के भाव जागृत होकर शिलीभूत हुए हैं इन रचनाओं में, जो समाज के सुख-दुःख, हर्ष-विषाद के ताने-बाने से बने हुए हैं और जिसमें समाज का स्पंदन है। इस सन्दर्भ में हम इस बात से सहमत हैं कि विश्वसनीयता के गुण होने पर ही कोई रचना पाठकों से अपना स्थायी सरोकार बना पाती है। अतएव इस विश्वसनीयता को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि रचनाएं यथार्थ से जुड़ी हों ताकि वे समय

और समाज को कुछ दे सकें। सच तो यह है कि लेखक भी वही सार्थक है जो जीवन की जटिलताओं को अपने नयनों से देख यथार्थ को लिपिबद्ध कर सके। रचनाकारों के इस तरह के प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाते। सांकेतिक प्रतीकों के माध्यम से जीवन-सत्य की अभिव्यक्ति हाइकु को सार्थकता प्रदान करती है।

इस काव्य संकलन के प्रणयन, पांडु-लेखन एवं उसके परिमार्जन में हमारे अग्रज-कविवर गोपी वल्लभ सहाय, आकाशवाणी, पटना के पूर्व केन्द्र निदेशक श्री बांकेनन्दन प्र. सिन्हा तथा बिहार प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ अधिकारी एवं साहित्य-सेवी श्री राय प्रभाकर प्रसाद, मार्ग-दर्शक प्रो0 रामबुझावन बाबू और हिन्दी विभाग, आर.आर.एस. कॉलेज, मोकामा (पटना) के प्राध्यापक डॉ. शिवनारायण की आत्मीयता मिली है जिनकी सद्भावनाओं के लिए उनके प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

सुपरिचित साहित्यकार तथा अपर उप नियंत्रक-महालेखापरीक्षक श्री गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव ने सहज भाव से इसकी भूमिका लिखकर मुझे अनुप्राणित किया है। मैं अनुगृहीत हूँ उनकी इस उदारता के लिए।

यह कहने में मुझे तनीक संकोच नहीं कि बिहार के महालेखाकार (लेखा परीक्षा)-I, पटना, श्री नन्दलाल ने भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग की ओर से अपेक्षित सहयोग प्रदान कर अपनी जिस हार्दिकता का परिचय दिया है, उसके लिए हम उनके कृतज्ञ हैं।

हमारे सहपाठी तथा हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं-विशेष रूप से आधुनिक कविता के सुपरिचित समीक्षक डॉ. नन्द किशोर नवल, विश्वविद्यालय प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, पटना विश्वविद्यालय ने इस संग्रह पर अभिमत प्रदान कर न केवल मुझ पर अपना स्नेह दर्शाया है वरन् हाइकु विधा की गरिमा को बढ़ाया है। मैं हृदय से आभारी हूँ उनका।

सिद्धेश्वर

'बसेरा'
पुरन्दरपुर, पटना-1
22 अक्टूबर, 1998

भूमिका

जब भी कविता की बात होती है मुझे आदरणीय डा. जगदीश गुप्त की पंक्ति याद आती हैं कवि वही जो कुछ अकथनीय कहे....। विधा कोई भी हो यदि कविता में अकथनीय कह सकने की सामर्थ्य है तो वह निश्चित रूप से हमारी संवेदनशीलता को स्पर्श करती है।

श्री सिद्धेश्वर जी के काव्य संग्रह **'पतझर की सांझ'** की कविताएं हाथ बढ़ा कर हमारे दुखते मन के ज्वालामुखी को छू लेती हैं और जीवन के अनेक प्रश्नों से साक्ष्य करा देती हैं। इस संग्रह का धरातल शायद आकाश की भाँति असीम है जहाँ प्रकृति से लेकर पर्यावरण तक और वेदना से लेकर संस्कृति तक हर कहीं कविता की स्पष्ट अनुगूंज सुनाई देती है। कविता लिखना और उसके माध्यम से श्लाघ्य आदर्श स्थापित करना एक अलग बात है किन्तु कविता की मूल प्रकृति को जी पाना एक अत्यन्त दुर्लभ बात है। सिद्धेश्वर जी अपनी कविताओं के माध्यम से न केवल इस सच को उद्‌घोषित करते हैं, वरन् जो उन्हें निकट से पहचानते हैं वे यह भी जानते हैं कि वह अपनी कविता एक-एक पल जीते हैं। ऐसे ही कवि का यह कथन हमें भीतर तक हिला देता है और आत्मचिंतन करने को विवश कर देता है -

ज़रूरी होता
होने के लिये कवि
आदमी होना।

इसका मूल कारण है - मंचीय प्रशंसा पाने की अदम्य लालसा और पेशेवर कविता के लटकों-झटकों से कोसों दूर खड़े इस कवि की सहज काव्यानुभूति और मानवीय परिवेश के रेशे-रेशे को अपने चिंतन का हिस्सा बनाना; ऐसा ही कवि कह सका है -

मानव एक
कविता का पहला
प्रतिमान है।

इस संग्रह की कृतियों में प्रकृति के बिखरे संसार के अनेक चित्रों के माध्यम से न केवल उसकी जीवंतता के स्वर मुखर हुये हैं वरन् वर्तमान जीवन की विसंगतियों और विवशताओं की प्रतिध्वनि भी सुनाई देती है। यदि

तपती धूप
तरसती पानी को
रेगिस्तान में

हाशियों पर टंगे हुए हमारी संवेदनाओं के आत्म-कथ्यों की चुभन दे जाती है तो

सीचते खेत

सूरज की किरणों

पड़ा है सूखा

प्राकृतिक आपदाओं की त्रासदी में मानवीय पीड़ाओं की खरकन दे जाती है। कवि टूटते हुये मूल्यों और विघटन की ओर सरकती मर्यादाओं वाले समाज और संस्कृति के प्रति पूर्ण सजग है और सच्चे मन से चाहता है कि संस्कृति को खाने वाले घुन का विनाश हो सके। किन्तु वेवाक सच्चाई यही है कि

खो चुके हैं

राष्ट्रीय स्वाभिमान

हम सब

और

चौराहे पर

खड़ा है राष्ट्र आज

अनिर्णय के।

इस संकट की घड़ी में भी कवि आशान्वित है कि एक सच्ची कोशिश फिर से जन-जन में चेतना भर सकती है और शायद दुख-दर्द भरी यह दुनियां एक बेहतर जगह बन सकती है

जहाँ गूंजेंगे

उसके भीतर भी

प्रणय-गान।

कुल मिला कर यह 'कविता संग्रह' मानवीय सरोकारों और सामाजिक संदर्भो के बहुत निकट है जहाँ जीवन अपनी सारी विद्रूपताओं, विरोधों ओर विवशताओं के साथ हमारे सामने आता है, किन्तु कवि की दृष्टि आशावादी है, इसीसे कविताओं का मूल स्वर हमें उद्वेलित करता है और लीक से हट कर कुछ करने को प्रेरित करता है।

आशा है यह कृति साहित्य जगत में अपना स्थान बनायेगी।

गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव
अपर उपनियंत्रक-महालेखापरीक्षक

डी-1/301, बापूधाम,
फान मार्ग, नई दिल्ली
25 नवम्बर, 1998

अनुक्रम

		पृष्ठ
1.	प्रकृति	18
2.	साहित्य	32
3.	संस्कृति	40
4.	हिन्दी	46
5.	कविता	51
6.	श्रृंगार	64
7.	राष्ट्रचेतना	77
8.	वेदना	89
9.	पर्यावरण	101

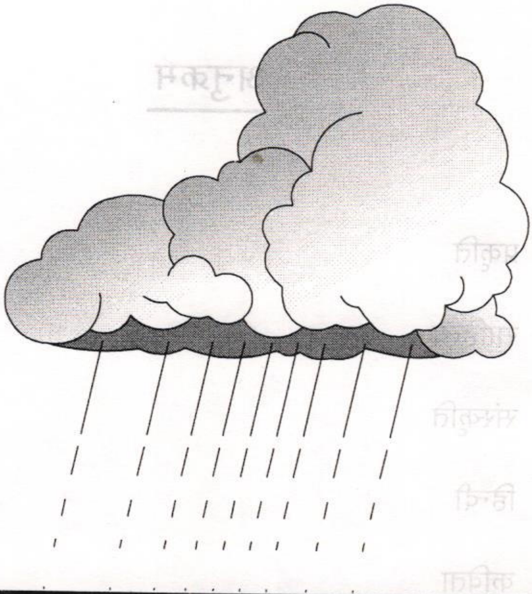

प्रकृति

आसान नहीं
गहरे सागरे को
जानना दोस्तो

प्रकृति

(1)
इठलाती है
धरती भी मोर-सी
पावस में ही

(2)
गा रहे लोग
लहरों के ताल में
प्रकृति-राग

(3)
सीखना चाहो
तो सागर लहरों
से सीखो यारो !

(4)
रश्मि ऋचा
प्राची में प्रस्फुटित
नमन करो

(5)
फूटती धारा
सावन की नदी की
तृप्त किनारा

(6)
निहारे भू को
आसमान से चाँद
शीतल आँखों

(7)
छवि उभरी
हरी पत्तियों पर
सूरज उगा

(8)
मचल रही
चाँदनी भी रात की
सागर-तले

(9)
रही तैरती
उतर चाँदनी भी
नदी की धार

(10)
लहर पर
मचलती चाँदनी
मछली जैसी

(11)
है सुनहरा
रेत के कणों पर
समंदर ही

(12)
है निहारता
नाव से सैरवाला
दोनों किनारा

(13)
टिका हुआ है
भू-पर जीवन भी
प्रकृति से ही

(14)
घुमड़ते हैं
आकाश में बादल
बुलाते वृक्ष

(15)
तपती धूप
तरसती पानी को
रेगिस्तान में

(16)
देखी हमने
शीशे के पार से ही
नदी की धारा

(17)
जो है धरा पे
प्रकृति आनन्द ले
पूर्ण रूप से

(18)
है संगम ही
आज कई रूपों का
प्रकृति में भी

(19)
भाव विभोर
सूर्यास्त का सिन्दूर
देखकर मैं

(20)
लग रहा है
जंगल का सन्नाटा
दुपहरी-सा

(21)
अनुपमेय
धरती भारत की
अपने-आप

(22)
वृक्ष का मूल
सागरों के झकोरे
मातृभूमि के

(23)
बरस आज
मतवाले बादल
मेरे आँगन

(24)
डैने फैलाए
आकाश में चिड़ियाँ
करती सैर

(25)
भींगी धरती
वर्षा की फुहारों से
देती सुगन्ध

(26)
भिगोया भू को
सुगन्ध बिखेरने
वर्षा फुहार

(27)
सुबह हुई
अनुराग से भरा
सारा क्षितिज

(28)
स्वागत गीत
सुबह होते ही
पक्षी ने गाया

(29)
खिलती सदा
मुस्कराने के लिए
कली हमेशा

(30)
बन जाती है
वसंत में प्रकृति
अभिसारिका

(31)
मद्धिम बूँदें
तपती धरती पे
फेंकती गंध

(32)
लौट आती हैं
तरंगें सागर की
कुछ देने को

(33)
खोती नहीं हैं
सागर की लहरें
मर्यादा कभी

(34)
करते नहीं
चोरी, डकैती पेड़,
सच मानिए

(35)
बदलते हैं
प्रकृति के विधान
भावनाएं भी

(36)
चलें सैर को
सुदूर आकाश की
पंख लेकर

(37)
पाते हैं मोती
गहरे सागर में
उतरने से

(38)
देख चकोरी
धवल चाँदनी को
मुस्काए मन

(39)
मन मयूरा
भटक रहा वन
उपवन में

(41)
भींगी धरती
उगले सोंधी गंध
वर्षा-कमाल

(43)
हरी पत्ती से
गिरी ओस की बूँदें
मोती लगते

(45)
रात अँधेरी
जुगनू बिखेरते
थोड़ी किरणें

(47)
क्यों इठलाते
फूलों को देखकर
भौंरे बाग में

(40)
अंग-अंग तू
पुलकित कर दे
काले बादल

(42)
गिलहरियाँ
चढ़तीं-उतरतीं
भांए मन को

(44)
गिरते पत्ते
पेड़ की डालियों से
हवा ले गए

(46)
फूल गुलाब
उड़ती तितलियाँ
रस लेने को

(48)
आसानी नहीं
गहरे सागर को
जानना दोस्तो

(49)
बादल-बीच
चमकती बिजली
वर्षा-आहट

(50)
चंदन-वन
बिखेरती सुगंध
पवन-संग

(51)
छत-मुड़ेर
उतरी है सांझ में
सूर्य किरणें

(52)
है बरसती
फिजाओं में आज भी
नूर किसके ?

(53)
रात कालिमा
एक नन्हा-सा दीया
छाँटा अंधेरा

(54)
है हँस रहा
समय का सूरज
अँधकार में

(55)
पिंजड़े-पंछी
निहारते तितली
स्पृह्य भाव से

(56)
उड़ते पक्षी
देखते पिंजड़े को
हहर जाते

(57)
पंख पसारे
वर्षा की फुहारों में
नाचे मयूर

(58)
फूल-कली में
हंस रहे हैं भौंरे
त्रस्त जनों पे

(59)
छिटक रही
बर्फीले पहाड़ों पे
किरणें-चाँद

(60)
हिंडोरे लेती
शरद की चाँदनी
सागर तले

(61)
काश ! बोलती
जल की मछलियाँ
नौकाएं देख

(62)
आकाश गंगा
झिलमिलाते तारे
लगे सुहाने

(63)
चमक रहे
नूतन किसलय
ये गुलाब के

(64)
मचल रहीं
जल की मछलियाँ
गांव-तालाब

(65)
चन्द्र-किरणें
हिलोरे ले रही हैं
सागर तले

(66)
पूनम-चाँद
बिखेरती किरणें
हुलसे जिया

(67)
बतिया रहे
नौका में एक साथ
मछेरे-सांझ

(68)
हैं झूम उठे
पेड़-पौधे मस्ती में
ग्रीष्म-वर्षा में

(69)
सभी पतंगें
हैं मरते-मिटते
एक किरण पे

(70)
है कंपा देती
झींगुर की झंकार
तन्द्रा के तार

(71)
बहलाती थी
अबतक मन को
संध्या अरुण

(72)
है मड़राती
अब कलियों पर
कोयल काली

(73)
सीखा कलि ने
सूनी डाली पर ही
मुस्काना सदा

(74)
केसर कली
लहराया पृथ्वी का
स्वर्ण-अंचल

(75)
बादल छाए
आँखों से निकले
सपने मेरे

(76)
एक गौरैया
चुपचाप बैठी है
वातायनी में

(77)
प्रेम को अंधो
कीड़ें मंडराते हैं
प्रकाश-तले

(78)
अबोध-नन्हें
लपके पकड़ने
ओस के मोती

(79)
कीट-पतंगें
कितने जीवन्त हैं
रोशनी-संग

(80)
विधवा हुई
पतझर की सांझ
हर काल में

(81)
वह शाम मैं
नहीं भूल सकता
नदी-तट की

(82)
अंकित होते
मिट्टी पे मेरे पैर
कुछ छोड़ते

(83)
आती जिससे
दिनकर किरणें
बन्द झरोखा

(84)
कर दी गयी
लहरों के हवाले
हमारी किश्ती

(85)
घूमने लगी
किश्ती समंदर में
पानी पर ही

(86)
लाल हो रहे
सूरज के प्रकाश
समुद्र तले

(87)
भिंगो जाती हैं
समुद्र की लहरें
मेरे पैरों को

(88)
आँखे टिकी हैं
दूर क्षितिज पर
बड़ी देर से

(89)
हमने किया
लहरों के हवाले
अपनी किश्ती

(90)
छूने की इच्छा
क्षितिज पे जाकर
आसमान को

(91)
पीने लगी है
धवल चाँदनी को
चाँद के होंठो

(92)
मोती गढ़ ले
समुंदर के तले
स्वाति-बूंद पर

(93)
खत लिखती
चाँद-चाँदनी पर
किश्ती सवार

(94)
बहा ले जातीं
समुद्र की लहरें
रेत के घर

(95)
किश्ती अकेली
तैर रही बेचैन
समुंदर में

(96)
सीचते खेत
सूरज की किरणें
पड़ा है सूखा

(97)
इमली-पेड़
चहकती चिड़ियाँ
गुलाबी जाड़ा

(98)
कच्ची सड़क
महुए की कतारें
फैली सुगंध

(99)
बरसात में
उड़ रहा बेपर
खग आसमां

(100)
लेता हिलोर
नभ में विहंगों के
मधुर राग

(101)
खिला कमल
परिचय पाकर
निर्मल जल

(102)
उगलता है
गगन अन्धकार
है अमानिशा

(103)
झरे पराग
कांपते किसलय
गाते खग हैं

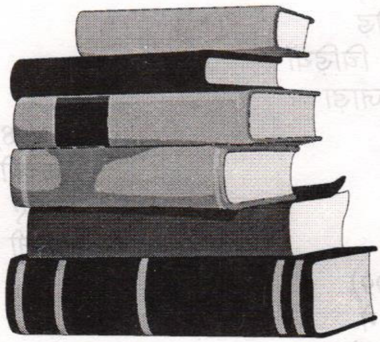

साहित्य

बनता नया
साहित्य-प्रेरणा से
जीवन मेरा

साहित्य

(1)
साहित्य में ही
इतिहास राष्ट्र का
प्रतिबिम्बित

(2)
साहित्य होता
उदात्त आदर्शों का
प्रतिष्ठापक

(3)
पोषक नहीं
होता साहित्य कभी
वर्गवाद का

(4)
होता आया है
युग का प्रतिनिधि
साहित्य सदा

(5)
वाहक होता
है सदैव साहित्य
परम्परा का

(6)
जटिल होता
युग-चेतना ग्रहण
साहित्य में भी

(7)
सच्चा आनन्द
होता है साहित्य का
सौन्दर्य में ही

(8)
साहित्यकार
नहीं भागता कभी
यथार्थ से भी

(9)
प्रेरणाओं का
उचित तारतम्य
साहित्य-लक्ष्य

(10)
सन्देह नहीं
साहित्य का आधार
सामाजिक है

(11)
सेवा करना
केवल साहित्य की
है धर्म मेरा

(12)
साहित्य पर
राजनीति-प्रभाव
बढ़ गया है

(13)
साहित्यकार
सामाजिक आकृति
का है चितेरा

(14)
जमती नहीं
मन की परतों में
बिना रचाए

(15)
वही साहित्य
सुलझाए जो आज
उलझनों को

(16)
कुसंस्कारों से
है दिलाता जो मुक्ति
साहित्य वही

(17)
पहुँचे लाभ
हों ऐसी रचनाएं
मनुष्यता को

(18)
बदलता है
राजनीति की दिशा
सत् साहित्य

(19)
लिखा आपने ?
सच्चा साहित्य कोई
समाज पर

(20)
साहित्य वही
मनुष्य को मनुष्य
बनाता है जो

(21)
लेखनी ऐसी
बन्धनों के खिलाफ
मिलती कहाँ ?

(22)
बह रही है
सृजन की गंगा भी
उल्टी दिशा में

(23)
विश्वास नहीं
आज के लेखकों को
नसीहत में

(24)
है अवदान
उपन्यास क्षेत्र में
प्रेमचन्द का

(25)
होते न बासी
निबन्ध बहुतेरे
द्विवेदी जी के

(26)
ओ सहधर्मी
साहित्य के द्वार पे
नमन तुम्हें

(27)
हैं यादें बाकी
बनारसी नजीर
काशी फ़कीर

(28)
सफल क्रान्ति
साहित्य व समाज
के विचारों से

(29)
जिस भाषा का
साहित्य अच्छा होगा
समाज अच्छा

(30)
आज अधिक
सामाजिक दायित्व
साहित्य पर

(31)
होता नहीं है
साहित्य विचार से
शून्य कभी भी

(32)
हाशिए पर
वर्तमान दौर में
रचनाकार

(33)
संकोच नहीं
मुझे सीखने में ही
कोई भाषा भी

(34)
उर्वर रहा
साहित्य की दृष्टि से
इलाहाबाद

(35)
अग्रणी रहा
साहित्य की धारा में
पाटलीपुत्र

(36)
अंग्रेजियत
भारत से आज भी
कहाँ गयी है ?

(37)
राजनीति का
चाकर बन गया
साहित्य आज

(38)
बने गुलाम
साहित्यकार आज
स्वार्थवश ही

(39)
जरूरत है
सांस्कृतिक उन्मेष
की साहित्य में

(40)
बुनियाद है
सृजन संस्कृति की
इसे जानिए

(41)
संस्कृति होगी
दिशाहीन अगर
सृजन नहीं

(42)
लोक साहित्य
देता है परिचय
राष्ट्रीयता का

(43)
प्रतिबिंब है
लोकसंस्कृति का भी
लोक साहित्य

(44)
श्रेष्ठ व्यक्तित्व
उत्कृष्ट साहित्य का
प्रतिफलन

(45)
अभिव्यक्ति है
मानस-संघर्ष का
साहित्य आज

(46)
पैदा करता
आधुनिक साहित्य
नया विश्वास

(47)
शिल्प विधान
साहित्य की रचना
में अनिवार्य

(48)
होता है लक्ष्य
सौन्दर्य की सृष्टि ही
कलाकार का

(49)
शिल्पी-तूलिका
से रूप और भाव
होते हैं व्यक्त

(50)
ग्राह्य नहीं है
बड़ी सहजता से
शिल्प का भाव

(51)
जाती है सदा
कलाकार की दृष्टि
त्रिकालों पर

(52)
जगाना भी है
दिल की भावना को
शिल्प का कार्य

(53)
तृप्त करता
हमारे नयन को
शिल्प-सौन्दर्य

(54)
बहा ले जाते
आसुओं के जल में
मेरे सपने

(55)
प्रतिष्ठा देता
साहित्य प्रयत्न को
दर्शन भी है

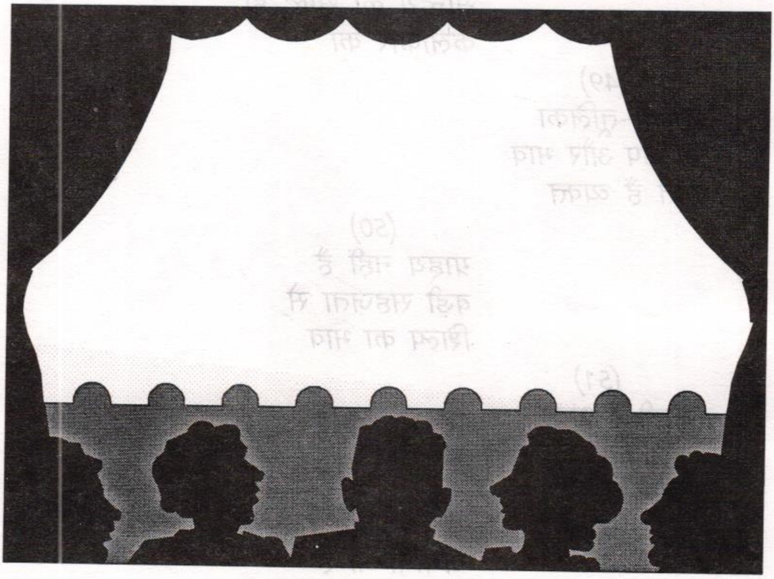

संस्कृति

मेरी पत्नी ने
टूटने से बचाया
मुझे सदैव

संस्कृति

(1)
भद्दे गीतों का
शोहरत के लिए
चलन आज

(2)
फिल्मी दुनिया
बदन दिखाने की
है आँधी चली

(3)
बेचैन आज
नई हीरोइनें भी
अंग-दिखाने

(4)
सुख तो सिर्फ
निर्वाण में निहित
है बुद्धमत

(5)
देती बढ़ावा
विपुल धनराशि
अपसंस्कृति

(6)
कहीं न अंत
भौतिक सुविधा का
होता है कभी

(7)
परिष्कारक
प्राकृतिक जीवन
की है संस्कृति

(8)
सभी रागों में
होता हृदय राग
उत्तम राग

(9)
माटी गंध से
सराबोर होता है
लोक संगीत

(10)
कला-संस्कृति
अन्तःऊर्जा होती है
मनुष्यों में भी

(11)
कूड़ेदान में
जाएगी फिल्म, गर
खाली-डिब्बा हो

(12)
होती जा रही
विचार व संस्कृति
हाशिए पर

(13)
खाए जा रहा
जाने कौन-सा घुन
संस्कृति को ही

(14)
जग जाती है
सुषुप्त अभिलाषा
कोमल क्षणों में

(15)
नहीं चाहती
छूट, कलुष भावें
सभ्यता सदा

(16)
मिटेंगे स्वयं
कलह छुटपुट
सहिष्णुता से

(17)
होती अलग
सदा एक संस्कृति
भाषाओं की भी

(18)
कर रही हैं
भाषाएं भी निर्माण
संस्कृति की ही

(19)
गहरी काफी
हमारी संस्कृति की
जड़ें यहाँ भी

(20)
जीता-जागता
प्रतीक संस्कृति का
भारत आज

(21)
कौंधता सदा
अंतिम विचार ही
मन-आंगन

(22)

उसे कहते
हो लगाव जिससे
अपना ही तो

(23)

बदल जाता
युग का दर्शन भी
युग के साथ

(24)

जीवन रस
ग्रहण करते हैं
लोक -संस्कृति

(25)

अंग रहा है
हमारी संस्कृति का
कला साहित्य

(26)

मत समझें
एक वाह्य गुण ही
कला को आज

(27)

प्राणवन्त हैं
जीवन के सौन्दर्य
से कला आज

(28)

कला का जन्म
हृदय और मन के
योग से होता

(29)

गूंज रही है
संस्कृति-मंडप में
अपसंस्कृति

(30)

रंग गयी है
शोणित-शुभ्रपट
संस्कृति चुप

(31)

कट रहा क्यों
मानव समाज ही
धरोहरों से

(32)

संस्कृति आज
ठहर नहीं रही
प्रदूषण में

(33)

मरते नहीं
विचारों की तरह
सारे सपने

(34)

नैतिक बोध
जिसमें जितना
सुसंस्कृत है

(35)

जुड़ा रहता
संस्कृति की स्मृति से
हर मनुष्य

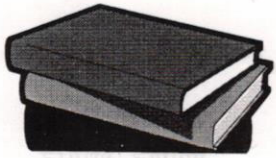

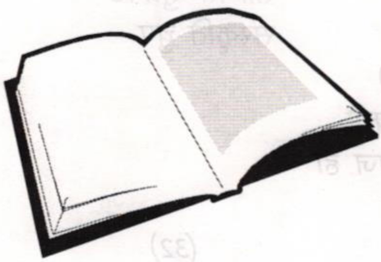

हिन्दी

वक्ता नहीं है
द्विवेदी जी–सा कोई
आज हिन्दी में

हिन्दी

(1)
हिन्दी का कोई
दीखता न विकल्प
किसी भाषा में

(2)
है यह स्पष्ट
सूर्य किरण-भाँति
हिन्दी हमारी

(3)
प्रथम स्थान
सुब्रमण्यम् भारती
हिन्दी में पाया

(4)
देना ही होगा
योग्य स्थान हिन्दी को
आज न कल

(5)
न मातृभाषा
है मातृ देश-भाषा
हिन्दी हमारी

(6)
न ले सकती
स्थान ही कोई भाषा
इस हिन्दी का

(7)
केरल-राजा
स्वाति तिरूनाब्ठ
पद्य हिन्दी में

(8)
कब बनेगा
राष्ट्रभाषा शीघ्र ही
राष्ट्र प्राण भी !

(9)
जोड़ना होगा
भाषा से जीविका
जन के लिए

(10)
है वह सूत्र
पिरोयी हुई माला
हिन्दी आज भी

(11)
है यह सही
जायेगी लादी नहीं
हिन्दी किसी पे

(12)
हो समर्थन
अहिन्दी भाषियों का
हिन्दी के लिए

(13)
है पैनापन
और सरसत्ता भी
हिन्दी भाषा में

(14)
पीछे रहेगी
कबतक हमारी
हिन्दी भाषा ही ?

(15)
करें विचार
राष्ट्रभाषा के लिए
गंभीरता से

(16)
हिन्दी हमारे
संस्कारों की हमेशा
है पहचान

(17)
जरूरत है
गतिशीलता की ही
आज हिन्दी में

(18)
जुड़ा है आज
राष्ट्र की प्रतिष्ठा से
प्रश्न हिन्दी का

(19)
अभी भी तो हो
जनता की भाषा में
राज का काम

(20)
जरूरत है
लचीला बनाने की
आज हिन्दी को

(21)
अभागिन-सी
दिखे आज सबों को
भारत-बिन्दी

(22)
जरा न माने
जनता की भाषा को
शासक आज

(23)
जुड़ न सकी
हिन्दी कभी रोटी से
इस देश में

(24)
बापू ने कहा
अंग्रेजी नहीं आती
दुनिया सुने

(25)
कहाँ हुई है
राजकाज की भाषा
हिन्दी आज भी

(26)
पलती दासी
राष्ट्र की भाषा हिन्दी
अपने घर

(27)
हिन्दी न हुई
राष्ट्रभाषा राष्ट्र की
आज तक भी

(28)
सदैव हिन्दी
ढुलमुल नीतियों
का है शिकार

(29)
तरस रही
हिन्दी भाषा आज भी
राज के लिए

(30)
मुक्त नहीं हैं
अंग्रेजी मोह-पाश
से हम अभी

कविता

हर कविता
कवि के ह्रदय में
होती कसक

कविता

(1)
बहाता सदा
है सरस सलिला
कवि धरा पे

(2)
जरूरी होता
होने के लिए कवि
आदमी होना

(3)
दें वाणी सदा
राष्ट्र की भावना को
भाई कवि जी

(4)
पृथक नहीं
शिल्प के प्रभाव सें
काव्य यहाँ का

(5)
कुछ लोग ही
हो पाते हैं अमर
गीत छूकर

(6)
फूट पड़ती
है आत्मनिष्ठा भी
कविताओं में

(7)
मानव एक
कविता का पहला
प्रतिमान है

(8)
लय शास्त्र है
कविता का अपना
इसे जानिए

(9)
घोर अनास्था
नए कवि को आज
आस्थावाद में

(10)
रख पाएंगे
ताजा तेरी स्मृति को
शब्द गीतों के

(11)
लिखता सदा
अपनी कविता में
पीड़ा-बोध को

(12)
हैं जन्म लेती
बड़ी पीड़ा के साथ
अच्छी कृतियाँ

(13)
कवि करता
सृजन जीवन के
कुछ क्षण का

(14)
होते हैं बंधे
रचनाकार, कवि
नियम से भी

(15)
जीता है कवि
आस्था और अस्तित्व
के लिए अभी

(16)
अभिशप्त हैं
आज कवि हमारे
सच के लिए

(17)
चाहिए होना
कवि को जिम्मेवार
अपने प्रति

(18)
समेटती है
सामाजिक चिंता को
हिन्दी कविता

(19)
लगाव बढ़ा
है कविता के प्रति
साहित्य में भी

(20)
लाक्षणिकता
चार चाँद लगाती
काव्य-शिल्प में

(21)
सेतु होता है
वस्तु व भाव लोक
मात्र बिम्ब ही

(22)
उमड़ता है
फूस की झोपड़ी में
सिन्धु-मानस

(23)
यादें संजोए
'नई धारा' पत्रिका
बेनीपुरी की

(24)
सपना नहीं
हो जिसके भीतर
कविता नहीं

(25)
कवि करता
अपनी रचना में
प्राण-प्रतिष्ठा

(26)
लिखी जाती है
सदा विवशता में
अच्छी कविता

(27)
धीर-गंभीर
मर्मभेदी आवाज
मेरे काव्य में

(28)
अभी शेष है
सच्चा लिखना ही
कवि बन्धु को

(29)
हैं हिन्दी कवि
अपने आपको ही
दुहरा रहे

(30)
जो शाश्वत हो
भावी पीढ़ी के लिए
लिखिए वैसा

(31)
दीखती आज
ज्यादा कविताओं में
गहन ऊब

(32)
है सहायक
अतुकांत छंद भी
सौन्दर्य वृद्धि

(33)
कविताओं में
असली संसार को
तराशा जाता

(34)
लिख रहा था
एक कविता वह
अपनी माँ पे

(35)
पलता सदा
कवियों के भीतर
रचना-भ्रूण

(36)
भाषा के सिवा
अन्य औजार नहीं
कवि के पास

(37)
देता प्रकाश
अंधेरी गुफाओं में
साहित्यकार

(38)
कवि कभी भी
अपनी अभिव्यक्ति
रोकता नहीं

(39)
रचनाओं में
होती है प्रवाहित
कवि की पीड़ा

(40)
कवि उगले
वाणी से पचाकर
पीड़ा-उल्लास

(41)
कविता आई
शब्दों के ही शरीर
पहनकर

(42)
अभाव यदि
प्रेरणा-स्रोत का हो
कविता बंद

(43)
ठोस न होती
बिना कृति के कीर्ति
व प्रतिष्ठा भी

(44)
लिखता नहीं
वाद में बंधकर
कोई कविता

(45)
ऐसा लिखिए
लेखक व पाठक
को कुछ मिले

(46)
स्वांतः सुखाय
रचना का उद्देश्य
होता है कभी

(47)
फूट पड़ती
हमारी कामनाएं
निर्दयता में

(48)
अवचेतन
में दबी वासनाएं
निकल पड़ीं

(49)
नहीं रुकता
प्रतिभा का विकास
रोकने से भी

(50)
कवि मित्रों के
सान्निध्य ने मुझको
कवि बनाया

(51)
फिसल रहे
उंगली के छूने से
हमारे शब्द

(52)
रचता रहा
शुभ और अशुभ
के सब बिम्ब

(53)
पैदा करेगी
जो कुहासा काव्य में
भाषा न मेरी

(54)
बन्द कमरे
खुली खिड़की-सा
तुम्हारा ख्याल

(55)
अटूट रिश्ता
शिल्प व सौन्दर्य का
काव्य में सदा

(56)
काव्य का लक्ष्य
आनन्द-उपलब्धि
लोक-मंगल

(57)
गीतों में व्यंग्य
कुनकुनी धूप-सा
फैल जाता है

(58)
अच्छा आदमी
ही लिख सकता है
अच्छी कविता

(59)
यश ही होते
काव्य के पुरस्कार
कवियों के भी

(60)
लालायित हैं
कवि प्रशंसा हेतु
चन्द शब्द के

(61)
बिखेरता है
कवि, कर्ण की भाँति
अनुभूतियाँ

(62)
काव्य-रचना
सामाजिक क्रिया है
किसी कवि की

(63)
नहीं रहती
बंधकर कविता
संकीर्णता में

(64)
कवि देखता
सामाजिक जीवन
में डूबकर

(65)
कहलाता है
वह आलम्बन, जो
भाव जगाता

(66)
काव्य जीवन
मार्मिक छवियों की
अभिव्यक्ति है

(67)
कल्पना होती
मानसिक व्यापार
सच मानिए

(68)
कल्पना होती
कविता का आधार
प्राण सर्वस्व

(69)
अभिव्यक्ति है
परिव्याप्त सत्य की
कल्पना सदा

(70)
अभाव होता
मुख्य कारण सदा
कल्पना का भी

(71)
उसी वस्तु की
करते हैं कल्पना
जो हैं अप्राप्त

(72)
आज कविता
हो गई है अलग
आम जन से

(73)
प्रमुखता है
कल्पना तत्व की ही
काव्य में सदा

(74)
चल रही है
जीवन सहेली-सी
मेरी कविता

(75)
झकझोरा है
हमारी कविता ने
मेरे मन को

(76)
हमारी भाषा
को संवारा है सदा
कविता ने ही

(77)
मेरे मित्रों ने
ही काव्य में डुबोया
मेरे कंठ को

(78)
बोधक नहीं
काव्य का प्रयोजन
किसी लक्ष्य का

(79)
संभव होता
कंगाल हृदय में
उत्कृष्ट काव्य

(80)
प्रेरणा-बीज
अर्थकृते-काव्य में
कहाँ होता है ?

(81)
असमर्थ है
एकाकी जीवन का
काव्य-निर्माता

(82)
गिरा नहीं है
आधुनिक युग में
काव्य का मूल

(83)
काव्य वही है
जो अनुराग लाए
धरा के प्रति

(84)
होना चाहिए
समाज की प्रगति
काव्य का लक्ष्य

(85)
सजीव होती
तल्लीनता में रची
गयी कविता

(86)
काव्य-रचना
देवी की प्रेरणा से
मूर्ख-प्रलाप

(87)
कवि होता है
साधारण मनुष्य
औरों की भाँति

(88)
प्रिय मित्रों की
अदम्य लालसा ने
कवि बनाया

(89)
प्यास मिटती
काव्य-सागर से ही
किसी कवि की

(90)
मानस-चक्षु
कवि के कवित्व की
पहचान है

श्रृंगार

ये मदमस्त
कहाँ से लाई तूने
मेंहदी हंसी

शृंगार

(1)
ये मदमस्त
कहाँ से लाई तूने
मेंहदी हंसी

(2)
छोरी बसन्ती
खुशबू की बाहों में
है इठलाती

(3)
है गूंज रहा
कहीं मेरे भीतर
प्रणय-गान

(4)
हैं लग जाते
चार चांद तुममें
हंसती जब

(5)
हो यदि तुम
पूरे शृंगार में जो
कवि-कल्पना

(6)
रहा चमक
सितारा चमकीला
मेरे दिल में

(7)
चलें सैर को
सुदूर आकाश की
पंख लेकर

(8)
करें यकीन
थीं चांद की तरह
तारों के बीच

(9)
कर दिया था
जानलेवा हुस्न ने
मानो जादू-सा

(10)
मुहब्बत का
इकरार न किया
उनसे कभी

(11)
उमड़ पड़ा
सैलाब आंसुओं का
मेरी आंखों में

(12)
दी है आहट
खनकती चूड़ियां
आमंत्रण की

(13)
होती प्रतीक्षा
सुखद व रसीली
प्रेयसी की भी

(14)
प्यार का जन्म
होता सेक्स से और
सेक्स का प्यार

(15)
तस्वीर तेरी
नयन में हमारे
कर तुम्हारे

(16)
अपना लिया
आँखों में छुपाकर
तुमको आज

(17)
झलक उठा
बंद पलकों में भी
मस्त चेहरा

(18)
हैं भरी हुई
झोली में ही उसकी
खुशियां सारी

(19)
प्रभाव होता
मधुर धूप सदा
शीत काल की

(20)
सघन छाया
तपती दुपहरी
आपकी हंसी

(21)
जीता मनुष्य
करने को बहुत
इसी आशा में

(22)
देती राहत
हल्की सी मुस्कान व
शब्द प्यार के

(23)
है याद आई
एक लमहे पर
तुम्हारी छवि

(24)
गुल मुहर
खोंसो मत जूड़े में
बहार बन

(25)
हो चिंतित क्यों ?
हर रात घनेरी
है जीवन की

(26)
बिगड़ी बात
संवादहीनता से
करें संवाद

(27)
बदल गई
प्रेम की परिभाषा
आज के वक्त

(28)
झांकता हुआ
गुलाबी मुखड़ा ही
था लुभावना

(29)
नहीं दीखती
दिल के आईने में
तस्वीर कैसी

(30)
उनकी बातें
मन में गुन-गुन
घुंघरूओं-सी

(31)
भोरों ने बेचा
अपने पंख तक
मधु के लिए

(32)
स्वर अपना
बेचा है कोयल ने
सघन-वन

(33)
जब तुम ही
छाओगी घटा बन
वे क्या कहेंगे ?

(34)
बात-बात में
उनके मुखड़े से
फूलझरियाँ

(35)
करना प्रेम
न कोई बुरी बात
है किसी से भी

(36)
है बुरी बात
किसी के प्रेम में ही
भटक जाना

(37)
मिलिए आप
मुसकराते हुए
किसी से भी

(38)
रातें मधुर
मदमाते नयना
क्यों आप मौन ?

(39)
एक प्रेयसी
सावन-सा सुख
देती प्रेमी को

(40)
लेती हिलोरें
एक साथ मन में
तू साथ हो तो

(41)
बिखरा हुआ
सृष्टि के कण-कण
में सौंदर्य है

(42)
छिटकने दें
खुद के दर्पण में
चांदनी-सी ही

(43)
चुपके आई
प्रवेश कर गई
मेरे अधरों

(44)
पिछला सारा
संत्रास धोना चाहा
धो नहीं पाया

(45)
सुहानी भोर
पुलकित हो रहा
प्रेयसी-मन

(46)
सन्निकट मृत्यु
महिला प्रसन्न है
पति के संग

(47)
वसंत कहाँ ?
मिलकर खोजना
होगा सबों को

(48)
प्रेम-कविता
तुम्हारे सान्निध्य में
हमने पढ़ी

(49)
रोम-रोम में
मखमली-उबाल
तुम्हारा ख्याल

(50)
उजास भरा
जब तुमसे मिला
सच मानिए

(51)
प्राचीन शैली
जीवन्त बना देती
यादों को सदा

(52)
बयां करती
समृद्ध अतीत की
दास्तां खुद ही

(53)
बहती नदी
बदल जाती जैसी
मेरी प्रीति भी

(54)
झलक देखी
पहचान न पाया
छिप गई वो

(55)
छिप जाता है
आधी रात का चाँद
जैसे प्रीतम

(56)
शराबी हँसी
चाँदनी की तरह
पर अस्पष्ट

(57)
प्रतिदिन के
प्रकाश की तरह
उल्लास-मन

(58)
वह आएगी
रात के बाद, जैसे
भोर का चाँद

(59)
चिड़ियाँ लौटी
अपने घोंसले में
बच्चे प्रसन्न

(60)
जन्मजात हैं
सौन्दर्य भावनाएं
सारे जन में

(61)
रोशनी देती
स्थान से आगे तक
प्रेम की ज्योति

(62)
सौन्दर्य बोध
होता, मन की एक
स्वतन्त्र क्रिया

(63)
सच्चा सौन्दर्य
मानव के उदात्त
भावों, कर्मों में

(64)
सिखलाते हैं
हंसमुख प्रसून
जो हंस पाओ

(65)
उर-सौरभ
से, जग का आँगन
भी भर जाओ

(66)
सौन्दर्य-बोध
प्रक्रिया के कारण
सबकी सृष्टि

(67)
प्यारी थी पर
पकड़ के बाहर
सदैव रही

(68)
है उपभोग
वासना का जागना
बस रस का

(69)
छलकता है
आनन्द का गागर
उपलब्धि में

(70)
नाच रही है
पुतलियाँ दगों में
दो मधुकर

(71)
उड़ आए हैं
नभ-नलिनों पर
ये दो चिड़ियाँ

(72)
किस आशा से
किस पग-धूलि
टटोल रहे

(73)
अधरों में ही
टप-टप गिरते
आशा के कण

(74)
चलता भावी
नयनों में सपने
हरियाली को

(75)
कैसे कहूँ मैं
अनन्त रमणीय
कौन हो तुम

(76)
होना चाहिए
सहृदय, भावुक
पाठकों को भी

(77)
खिलता सदा
उर्वर भूमि में ही
बिम्ब का फूल

(78)
गगन-चित्र
खींचते नयन में
जलधि भी तो

(79)
उतर रही
वह सन्ध्या-सुंदरी
आसमान से

(80)
कुछ न हुआ
कुछ न होगा कभी
यदि तुम पास हो

(81)
जैसे हम हैं
वैसे ही रहें हम
यही क्या कम ?

(82)
बहते रहे
सुख के सागर में
तुम्हारे साथ

(83)
सुख के दिन
भले ही डूब जायं
पर साथ हो

(84)
बाढ़ में बहे
मन सरलता के
जल-बिन्दु-सा

(85)
माथे अबीर
गाल सिंदूरी दिखे
गुलाबी आँखें

(86)
स्नेह निर्झर
सदैव बहता है
रेत ज्यों तन

(87)
याद आती है
अतीत की जब भी
हंसते मन

(88)
शुद्ध चित्त में
उगता प्रेमांकुर
खींचे मन को

(89)
छीन लेता है
नारी का गुप्त धन
संचित प्रेम

(90)
बढ़ा चरण
फिर धीरे-धीरे ही
प्रेमी आंगन

(91)
लावण्य भार
एक मेरे उर में
मैं हूँ निश्चिंत

(92)
सब गाते हैं
सम्मिलित कंठ से
कीर्ति अमर

(93)
है याद आया
प्रथम मिलन का
भींगी पलकें

राष्ट्र चेतना

चेतना भरो
भर सको अगर
तो जनता में

राष्ट्र चेतना

(1)
सींचती सदा
देश की जड़ों को ही
राष्ट्र चेतना

(2)
चौराहे पर
खड़ा है राष्ट्र आज
अनिर्णय के

(3)
धुँधली पड़ी
आजादी के पूर्व की
राष्ट्र चेतना

(4)
गुजर रहा
संकट-दौर से
राष्ट्र हमारा

(5)
खो चुके हैं
राष्ट्रीय स्वाभिमान
हम अपना

(6)
धर्म व जाति
सभी से ऊपर है
अपना राष्ट्र

(7)
कशिश एक
आज भी मेरे मन
हों राष्ट्र एक

(8)
क्षरण हुई
हममें इच्छाशक्ति
आजादी बाद

(9)
ज्यादा खतरा
राष्ट्रीय एकता को
जातिवाद से

(10)
है छिन्न भिन्न
सामाजिक ताना ही
जातिवाद से

(11)
हो मतदान
राष्ट्रीय एकता के लिए
समझकर

(12)
गुण-दोषों का
विवेचन हो आज
प्रत्याशियों के

(13)
लोलुप नेता
न उभरने देता
राष्ट्रीयता भी

(14)
आखिर आप
भी कबतक सहेंगे
चुप्पी तोड़िए

(15)
परिवर्तन
के लिए तटस्थता
छोड़नी होगी

(16)
ताकत से ही
राष्ट्र विरोधियों का
मुकाबला हो

(17)
सामना करें
विदेशी शक्तियों का
दृढ़ता से ही

(18)
कुशल नहीं
भारत की नाव का
नाविक कभी

(19)
है जरूरत
देश को संभालना
साधन-भरा

(20)
काफी बाधक
देश में जातिवाद
विकास-मार्ग

(21)
कहाँ जा रहा ?
भारत सुनहरा
अगली सदी

(22)
देश के पास
है बाँटने के लिए
कुछ न आज

(23)
जरूरी आज
तटस्थ राष्ट्रों को भी
ठोस आधार

(24)
है जरूरत
आज भी जगाने की
सुप्त चेतना

(25)
है थक चुका
चुनौतियाँ अनेक
नेतृत्व आज

(26)
जगाएं आप
परंपरा वीरता की
इस देश की

(27)
है कह रही
सब कुछ जनता
दबी जुबान

(28)
है अच्छी नहीं
आज भारत की भी
आर्थिक दशा

(29)
आज भारत
भुगत रहा सजा
अन्तर्विरोध

(30)
न कोई सेवा
मातृभूमि की सेवा
से बढ़कर

(31)
वही सवाल
जनता के सामने
क्या हो राष्ट्र का ?

(32)
फिदा होना हो
तो होइए पहले
राष्ट्र पर ही

(33)
है क्या हो गया
राष्ट्रभक्ति-लहर
को आज यहाँ ?

(34)
यह सवाल
खुद से पूछें आप
है राष्ट्र कहाँ ?

(35)
राष्ट्र चेतना
बस प्राणशक्ति है
इसे जानिए

(36)
हो रही लुप्त
हमारे हृदय से
राष्ट्र चेतना

(37)
व्यवहार से
कोई बाधा नहीं हो
राष्ट्रहित को

(38)
बनती सदा
पहचान हमारी
राष्ट्रीयता से

(39)
विचारें आज
क्या कर रहे आप
देश के लिए

(40)
खड़ा सवाल
है देश के सामने
स्थिरता का भी

(41)
ह्रास कितना
राष्ट्रीय भावना का
आज हो रहा

(42)
हुआ विनाश
सबसे ज्यादा आज
देश भक्ति का

(43)
पनपा नहीं
नेह सद्भावना का
आजादी-बाद !

(44)
लड़खड़ाती
एकता, अखंडता
इस राष्ट्र की

(45)
जरूरत है
हमें नव निर्माण की
स्व रक्षार्थ भी

(46)
क्यों निरादर ?
आज नर-नारी का
इस राष्ट्र में

(47)
होगा उठाना
स्वतंत्र भारत का
नैतिक स्तर

(48)
स्मरण करें
कर्ण का पराक्रम
इस देश में

(49)
सिवा खोने के
क्या पाया है हमने
आजादी बाद ?

(50)
अग्रणी रहे
राष्ट्रीयता चेतना में
हिन्दी प्रदेश

(51)
करना हमें
नया चिंतन आज
नए तरीके से

(52)
सिर्फ करना
प्यार मातृभूमि से
है काफी नहीं

(53)
दीजिए जोर
कथनी से अधिक
करनी पर

(54)
समझाना है
दूसरे को प्रेम से
बात अपनी

(55)
दी है किसी ने
भारत को आजादी
भीख में नहीं

(56)
मातृभूमि के
स्पर्श रजकण का
है देशभक्ति

(57)
कहाँ गए वे
आदर्श व संकल्प
जो थे देश के

(58)
बलवती थीं
राष्ट्र की भावनाएं
आजादी-पूर्व

(59)
जुटना होगा
राष्ट्रीयता के लिए
प्राणपण से

(60)
सारे जहाँ से
देश अपना अच्छा
जो देता भाव

(61)
एक लिपि का
राष्ट्रीय एकता में
प्रबल दान

(62)
भाषा समृद्ध
दूसरी भाषाओं से
शब्द लेकर

(63)
कारगर था
गाँधी का आन्दोलन
भारत छोड़ो

(64)
कौन सुनता
अब गाँधी की बात
इस जहाँ में

(65)
दीवार-टंगी
तस्वीर गाँधी की
सिर्फ दिखावा

(66)
सही पथ के
पथिक आज कहाँ
इस देश में

(67)
कौन लाएगा
सही रास्ते पर भी
इस देश को

(68)
जगाना हमें
भारत के लोगों में
जन-चेतना

(69)
पहुंचाना है
कबीर की वाणी को
लोक-मानस

(70)
हमें बुलाते
हमारी जिन्दगी के
सच अक्सर

(71)
बहता हुआ
हमारी जिंदगानी
इक दरिया

(72)
नहीं मालूम
सच को क्या कहते
इस देश में ?

(73)
लालसा लगी
मगध की मिट्टी से
जुड़ने की ही

(74)
सामने खड़ा
भारत के समक्ष
यक्ष्य-प्रश्न है

(75)
मूल्य-आदर्श
को सभी सराहते
हिन्दुस्तान में

(76)
करता रहा
अन्याय के खिलाफ
शंख-नाद मैं

(77)
गोली बंदूक
सत्यमेव जयते
के स्थान पर

(78)
आजादी दूंगा
तुम मुझे खून दो
वाणी नेताजी

(79)
आजादी आई
भारत के बस्ते में
पर सस्ते में

(80)
बिना हिंसा के
अपनी स्वतंत्रता
हमने पाई

(81)
पोल खोलते
यदि बोलते पक्षी
जनगण की

(82)
हाड़-मास का
व्यक्ति, महात्मा गाँधी
क्या पैदा हुआ ?

(83)
न तन सेवा
और न धन सेवा
भुवन-सेवा

(84)
आप मानिए
जीवन का दूसरा
नाम गति है

(85)
करती सदा
समाज-संचालन
वह गति है

वेदना

दुनिया सारी
दुःख दर्द भरी है
चलो संभल

वेदना

(1)
घायल मन
जाने कैसी खुशियाँ
हैं अश्रु भरे

(2)
व्यथित तन
कैसे सुनायें आज
गीत नयन

(3)
गुनगुनाएँ
लेकर आंसुओं को
ही नयन में

(4)
गिड़गिड़ाएँ
रो कर सौ-सौ बार
पर बेकार

(5)
हारा हुआ
पथित पथ पर
डगमगाता

(6)
मिलता नहीं
कोई इस जहाँ में
जो दु:ख बांटे

(7)
अश्रुधार
रुके न नयन के
चाहकर भी

(8)
है चली गयी
वह नींद चुराकर
चुपके से ही

(9)
है देती गयी
साथ-साथ जाने के
एक आह भी

(10)
है चली गयी
वह प्यास जगाकर
हमराही भी

(11)
क्यों फेंक दिया
दर्द के सागर में
मुझे आपने

(12)
चुभ रही थीं
खामोशी की किरिचें
मेरे दिल में

(13)
समेट रहा
यादें बिखरी हुई
हारकर ही

(14)
ज्यों-ज्यों दवा की
दर्द बढ़ता गया
अब क्या करें ?

(15)
आंगन-सूना
सब कुछ है बस
आपके बिना

(16)
कांपते दीप
आंगन बरसात
तुम अनोखे

(17)
तट पे बैठे
हो मौन आज तुम
आस किसकी !

(18)
गया वापस
वह नाव अपनी
आँसू नयन

(19)
वह सपना
अब बीत गया है
जो था सुहाना

(20)
जग जाएँगी
देखकर आपको
यादें पुरानी

(21)
मालूम नहीं
किसकी तलाश में
कब निकला ?

(22)
नहीं जलेंगे
चिराग कोठियों के
अनवरत

(23)
जी रहे हम
भरोसे कल के ही
सच मानिए

(24)
हो रहा आज
चांदी के उजाले
हर कुकर्म

(25)
नायक खड़े
मुखौटा है पहने
खलनायक

(26)
करते चोट
सीधे ही अन्तर्मन
ताने आपके

(27)
होता असर
नई बहुओं पर
सास का ताना

(28)
घटता जाता
प्रेम व मादकता
शादी के बाद

(29)
पढ़ना चाहा
उदास जिंदगी को
पढ़ न पाया

(30)
दिल चाहता
गम के लमहों में
हंसने को भी

(31)
पता नहीं क्यों ?
खुशी के मौके पर
रोना चाहता

(32)
हैं झलकती
लकीरें उदासी की
चेहरे पर

(33)
रहा उतर
बनकर जहर
दिल का दर्द

(34)
रोने से नहीं
जीवन की समस्या
सुलझाने से

(35)
राख हो चुकी
स्वयं को जलाकर
गम की आग

(36)
सिमट आए
थे तमाम फासले
मेरे दर्द के

(37)
गहरे हुए
गम के बादल भी
चेहरे पर

(38)
अगरबत्ती
सुलगे व महके
औ बुझ गए

(39)
वास्तविकता
होती है पथरीली
और दूर भी

(40)
न पढ़ पाया
उदास चेहरों को
कोशिश तो की

(41)
भींजता गया
रेगिस्तान धूप-सा
तुम्हारा दर्द

(42)
सहता रहा
जेठ की नदियों-सा
विरह-दर्द

(43)
नीर पिलाया
तू ने आखिर तक
पर क्या पाया ?

(44)
उठे ऊपर
दर्द भावनाओं के
सीने लेकर

(45)
पिया करते
वे कटाक्षों को सदा
अमृत-सा ही

(46)
टूटा हुआ हूँ
चन्दन का टुकड़ा
फिर भी हूँ मैं

(47)
है देती गयी
जाने के साथ-साथ
एक आह भी

(48)
अबकी बेर
तुम कहाँ मिलोगे ?
ओ चित्तचोर !

(49)
सुनाएं किसे
लोरी के स्वर वह
अभागिनी जो

(50)
क्षण वासन्ती
है प्यासा मन जैसा
विरह-गीत

(51)
है रास्ता कहाँ ?
जिस पे जा सकूँ मैं
टूटे मन से

(52)
लगेगा वक्त
सूखने में आँसू के
घाव गहरा

(53)
मन उदास
है गगन उदास
धुआँ-धुआँ-सा

(54)
मुरझा गईं
सुनकर बात वो
मनाइए तो !

(55)
घर-आँगन
बिन तुम्हारे सूना
आते नहीं क्यों ?

(56)
तान मिला दे
मेरी धड़कन में
धड़कन से

(57)
गए बिखर
टूटे घुंघरूओं से
सारे सपने

(58)
कैसे जोडूं मैं
सपनों की डोर को
जो टूट गई

(59)
गले का हार
बन गया है आज
मौत का फंदा

(60)
नहीं मिलता
सभी को सबकुछ
कोशिशों बाद

(61)
किस-किस से
कहूँ व्यथा अपनी
कथा-पुरानी

(62)
कौन सुनेगा ?
इस आपाधापी में
व्यथा हमारी

(63)
दुःखी लोगों को
लगता है दिन भी
अमावस-सा

(64)
होता कठिन
लमहा जिंदगी का
विधवाओं के

(65)
होते न लोग
संकट कितने हों
स्पंदित आज

(66)
जीते हैं हम
छोटे दायरे में ही
आत्म मोह के

(67)
भुलाया मैंने
उम्र के खरोश में
आप सभी को

(68)
घूमते रहे
उदास चेहरे ही
मेरी आँखों में

(69)
कुरेदती हैं
सदा मेरे मन को
यादें धुंधली

(70)
आतीं नहीं
कहकर कभी भी
परेशानियाँ

(71)
मुरझाते हैं
गूंथने के पूर्व ही
फूल माला के

(72)
न हों मायूस
शाम के ढलने से
होगी सुबह

(73)
तपती धूप
कहती कुछ नहीं
दुपहरी में

(74)
झेलूं कैसे मैं
मृत्युजन्य शोक को
है प्रश्न आज

(75)
शिकायत है
आपकी जायज ही
लाचार हूँ मैं

(76)
तस्वीर तेरी
है हमेशा समायी
मेरे दिल में

(77)
सब कुछ है
तुम्हारा ही आज भी
टूट के बाद

(78)
भींगता गया
रेगिस्तानी धूप-सा
तुम्हारा दर्द

(79)
सब चूर हैं
जो देखे थे सपने
सारे हमने !

(80)
मेल मिलाप
अरसों का आपसे
छिन गायब !

(81)
चुकानी पड़ी
मुझे बड़ी कीमत
निष्ठा के लिए

(82)
है मीत कहाँ
बचा सके आज जो
यौवन-भार !

(83)
इलाज ही क्यों
गर बीमार ही न
मानें उसे तो !

(84)
देती रहेंगी
आप भी कबतक
कोरी तसल्ली

(85)
हंस न सका
कोशिश के बाद भी
तप्त ताप से

(86)
तलाशता हूँ
उदास चेहरे में
सपने तेरे

(87)
नहीं ठिकाना
किस ओर मुड़ेगी
मेरी जिन्दगी

(88)
बनाए रखें
खुद को उपयोगी
और ग्राह्य

(89)
किसे कहूँ मैं
मैं खुद खो गया हूँ
किसी याद में

(90)
एक परिन्दा
घोंसला बना डाला
मेरी आँख में

(91)
सभी मनुष्य
अकेले ही अकेले
आते व जाते

(92)
बोता है कोई
पर काटता कोई
दूसरा ही है

(93)
सुखी संसार
फिर भी दीख रहे
दुखिया सारे

(94)
रास्ते हैं कई
दिशाएं दब गईं
थके हैं लोग

(95)
व्यथा कहती
विधवा अभागिन
खुद दिल की

(96)
दुःखी बढ़ते
जिज्ञासु नजरों से
प्रवेश-द्वार

(97)
अंधा आदमी
पकड़े अंगुलियाँ
रोटी के लिए

(98)
उसका शब्द
मुझे भी बार-बार
खटक रहा

(99)
पैरों के बल
मकड़े बुनते हैं
मकड़ी-जाल

(100)
हाथों रहती
अंचार की जो गंध
देती दुःख है

(101)
कहाँ सुनता
क्यों रो रहा है कोई
आज कहीं पे

(102)
किस तरह
देखी विद्रूपताएं
चोट की मैंने

(103)
संजोए रहा
अपने सपनों को
सदैव मैंने

(104)
कितने सहे
आह तक निकली
कहाँ घात के ?

(105)
दो लाशें पड़ीं
मनहूस सुबह
रोज की भाँति

(106)
अपनी व्यथा
अन्तर्मन की कथा
किसे सुनाऊँ ?

(107)
छिपी लालसा
हमारे नयनों से
आना चाहती

(108)
बढ़ता रहा
तमस का हृदय
चीरकर मैं

(109)
पलते रहे
स्वप्न भी आगत के
आँखों में सदा

(110)
मानव सदा
खोजता ही रहा है
मुक्ति का पथ

(111)
काम है ये भी
पत्थर तराशना
नाली खोदना

(112)
झरिया आज
बैठा है आग के ही
दरिया पर

(113)
निराश होते
बच्चे व महिलाएं
आज के दौर

(114)
ले जा रहे हैं
खुशियों भरा दिन
अपने साथ

(115)
हत्या हो रही
है नए स्वप्नों के
रोज ब रोज

(116)
दमन होता
नई-नई इच्छाओं
के एक दिन

(117)
जा रहे हैं
हत्यारों की झोली में
सारे उत्सव

(118)
एक सपना
अपना ही हो एक
घर अपना

(119)
अधूरा ही है
सबके लिए घर
आज तक भी

(120)
अलग दर्द
होता है, किराए के
मकान में भी

(121)
इस युग में
संवेदनाएं कहाँ ?
मुद्रा प्रधान

(122)
सुविधा कम
मकान-किराए का
किराया ज्यादा

(123)
भंवर आए
और साथ ले जाए
युग दो युग

(124)
पार कराना
बनकर छतरी
भटकूँ राह

(125)
क्यों न खाते
जीवन से भी मेल
मेरे सपने

(126)
छूट जाता है
सपनों में भी दूर
मेरा जीवन

(127)
एक तरफा
कभी नहीं चलता
किसी का प्यार

(128)
याद करता
तुम्हें हर वक्त मैं
तकलीफ में

(129)
कड़कती है
बिजली, सिमटूँ मैं
तुम्हारे लिए

(130)
तड़प जाती
देखते ही चाँद को
आसमान में

(131)
आना चाहती
थकी हुई शाम-सी
तुम्हारे पास

(132)
वेदना सहूँ
अपने हृदय में
दुर्भाग्य वश

(133)
रंग अपना
खो रहा है रक्त भी
धमनियों का

(134)
किसे सुनाऊँ
व्यथाएं मैं अपनी
सब बहरे

(135)
हर वाद के
अपवाद में हम
पिसते रहे

(136)
द्वेष व घृणा
हँस रहे हमारी
मूर्खता पर

(137)
अनैतिकता
आज नैतिक कार्य
समझा जाता

(138)
ऐसा लगता
मानवता का बीज
चला हिन्द से

(139)
बदल गए
पैमाने यहाँ सब
नैतिकता के

(140)
आतंकवाद
के बरसते शोले
लगते भोले

(141)
धोयी जाती है
सदा आंसुओं से
दिल की मैल

(142)
दो-चार पल
वह जीया करती
इंतजार में

(143)
दिल भी भारी
संजीदगी जिंदगी
आँखें नम हैं

(144)
देखता रहा
बीते हुए वर्ष को
कौतूहल से

(145)
ईश्वर करे
न कोई वर्ष आए
बीते वर्ष-सा

(146)
किसे सुनाऊँ
करुणा की कहानी
हम अपनी

(147)
होता विरोधी
सत्य का एकता का
खण्ड सर्वदा

(148)
जानता हूँ मैं
रात फिर आएगी
भोर से डरता

(149)
कटी है रात
तुम्हारी प्रतीक्षा में
आए न तुम

(150)
अकेली राह
सूनी-सूनी डगर
विधवा जैसी

(151)
अभिव्यक्ति है
असीम वेदना की
ताजमहल

(152)
मूक वेदना
ताज के निर्माण में
व्यक्त हुई है

(153)
दिखाई दिए
और जुदा कर चले
हमें आप से

(154)
एक विरही
अनुभूति विदग्ध
स्वयं पीड़ा की

(155)
दूर की कौड़ी
लाने की व्यर्थ चेष्टा
सृष्टि नहीं है

(156)
सीख न पाया
अपनाना दुःख को
सुख से कभी

(157)
जल जाती हैं
अंध-भावनाएं भी
विद्रोह से ही

(158)
गीत गाने दो
मुझे भी वेदना के
न रोको कभी

(159)
सूखी दिखी जो
आम की वह डाल
कहानी कही

पर्यावरण

प्रभावित है
भारत की आबादी
प्रदूषण से

पर्यावरण

(1)

बरसे मेघ
रेगिस्तान में आज
जंगल कहाँ ?

(2)

खोजते आज
आदमी के जंगल
याचक वृक्ष

(3)

एक ही रास्ता
प्रदूषण-मुक्ति का
जागे जनता

(4)

क्यों-प्रदूषित
अनुपमा धरा ही
आज हो रही

(5)

होगा बचाना
प्रकृति अनुपम
आज हमें ही

(6)

महत्व बहुत
नाभिकीय उर्जा का
विकास-क्रम

(7)

बरामदे में
लगाएं पेड़-पौधे
फुरसत में

(8)

करें सफाई
गर काम न कोई
खुद घर में

(9)

है बढ़ रहा
बहरेपन-ओर
बढ़ता शोर

(10)

रिस रहा है
कल-कारखानों से
आज जहर

(11)

बढ़ रहा है
जहरीलापन भी
वायु में तीव्र !

(12)

होड़ लगाए
प्रदूषण फैलाने
में प्रतिष्ठान

पतझर की सांझ

सिद्धेश्वर जी के हाइकु मुझे पढ़ने को मिले। इनके विषयों की विविधता है और आज के समाज के विविध प्रश्नों को हाइकु की विधा में उतारा है। साहित्य, संस्कृति, श्रृंगार, राष्ट्रचेतना, पर्यावरण को जहाँ इन्होंने अपना विषय बनाया है वहीं वेदना पर भी बड़े मार्मिक ढंग से अपने भावों को इन्होंने अभिव्यक्त किया है –

व्यथित मन	क्यों फेंक दिया	नहीं जलेंगे
कैसे सुनायें आज	दर्द के सागर में	चिराग कोठियों के
गीत नयन	मुझे आपने	अनवरत

साथ ही प्रकृति-चित्रों का समावेश भी सिद्धेश्वर जी ने अपनी हाइकु कविताओं में बखूबी किया है। जहाँ वे केवल भाव अथवा प्रकृति-सौन्दर्य को विषय के रूप में लेते हैं वहाँ उन्होंने कुछ अच्छे हाइकु दिए हैं, यथा-

मचल रही	गा रहे लोग	तपती धूप
चाँदनी भी रात की	लहरों के ताल में	तरसती पानी को
सागर-तले	प्रकृति-राग	रेगिस्तान में

इनकी ओजपूर्ण भाषा में रचित हाइकु की यह काव्य-कृति आधुनिक सामाजिक-साहित्यिक संदर्भों में भी सर्वथा प्रासंगिक एवं सार्थक है। इस कृति में मानवीय मूल्यों-मर्यादाओं के स्खलन के विरूद्ध जन-मानस में संघर्ष-चेतना जागृत करने का संदेश है। कवि ने पूरी ईमानदारी के साथ समसामयिक स्थितियों को निरूपित किया है। हाइकु के प्रति सिद्धेश्वर जी की रूचि प्रशंसनीय है।

विश्वास है इस कृति का हिन्दी जगत में सर्वत्र स्वागत होगा।

सत्यभूषण वर्मा
जापानी भाषा विभाग
जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

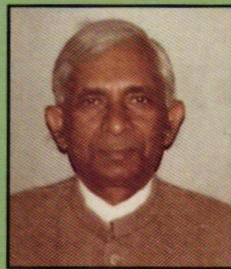

सिद्धेश्वर

पूरा नाम	:	सिद्धेश्वर प्रसाद
संक्षिप्त	:	सिद्धेश्वर
जन्म तिथि	:	18 मई, 1941
जन्म स्थान	:	ग्राम+पत्रा-बसनियावाँ, जिला- नालन्दा (बिहार)
शैक्षणिक योग्यता	:	1962 में एम.ए., पटना विश्वविद्यालय
तकनीकी योग्यता	:	1973 में भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग की एस.ए.एस. परीक्षा उतीर्ण
अभिरूचि	:	सामाजिक-साहित्यिक गतिविधियों से गहरा लगाव, पत्र-पत्रिकाओं का संपादन-संयोजन
लेखन	:	कविता, कहानी, निबन्ध, संस्मरण एवं साहित्यिक रिपोर्ताज आदि विधाओं में अनवरत लेखन तथा राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से रचनाएं प्रसारित।
प्रकाशित कृतियाँ	:	कल हमारा है, आरक्षण, बिहार के कुर्मी (निबन्ध-संग्रह), बिहार के कुर्मी (निदेशिका), पतझर की सांझ (हाइकु कविताओं का संग्रह)
प्रकाश्य कृतियाँ	:	भींगी धरती देती सुगन्ध, भींगी पलकें (सैन्र्यू कविताओं का संग्रह)
संपादन	:	राष्ट्रीय विचार पत्रिका, विभागीय पत्रिका-'प्रहरी', 'यादें' (काव्य-संकलन)
सम्प्रति	:	वरीय लेखा परीक्षा अधिकारी, कार्यालय-महालेखाकार (लेखा परीक्षा)-1, बिहार, पटना, महासचिव राष्ट्रीय विचार मंच, प्रधान संपादक 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका', सदस्य, रेलवे हिन्दी सलाहकार समिति, रेल मंत्रालय, नई दिल्ली।
स्थाई पता	:	'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800 001 (बिहार) दूरभाष : 0612-228519

...

पतझर की साझ (हाइकू काव्य-संग्रह) सिद्धेश्वर